दुनिया के रंग हज़ार

आमोद कारखानिस

अपने आसपास नज़रें दौड़ाएँ तो कितने सारे और कितने अलग-अलग सजीव दिख जाएँगे। चलो देखते हैं हम इनमें से कितनों को याद कर पाते हैं। शुरुआत पालतू जानवरों से करते हैं – गाय, भैंस, बिल्ली, कुत्ता, सुअर, चूहा, ...। स्तनपाई जीवों में आएँगे – हाथी, व्हेल, बाघ, शेर, तेन्दुआ, चीतल, हिरण....। पक्षियों पर आते हैं – गौरैया, कौए, मुर्गी, मोर, इगरेट, बत्तखें, चील, तोते, फ्लाइकैचर, पतरंगी.....। अभी भी सूची अधूरी है। अभी इसमें कई जीव और शामिल होंगे। जैसे, रेंगने वाले साँप, केंकड़े, गिरगिट... कीड़े जैसे मकड़ी, कॉकरोच, टिड्डे, पतंगे.... और फिर हम खूबसूरत तितलियों को कैसे भूल सकते हैं? भारत में ही इनकी दो हज़ार से ज़्यादा प्रजातियाँ हैं। अब ज़मीन और पानी में रहने वालों की बात करते हैं जैसे मेंढक, केंकड़े...। पानी में घुसें तो हज़ारों किस्म की मछलियाँ नज़र आ जाएँगी। लेकिन जीवों का संसार केवल वही तो नहीं जो आसपास नज़र आता है। उन महीन जीवों का एक अलग संसार है जिन्हें सिर्फ सूक्ष्मदर्शी से ही देखा जा सकता है। जैसे, पैरामीशियम, डायटम्स। किस्म-किस्म के बैक्टीरिया हैं – कुछ हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं जैसे, दही जमाने में मददगार लैक्टोबैसिलस। तो कई बैक्टीरिया हैजा, मलेरिया, टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैलाने के कारक बनते हैं। फिर वायरसों का विशाल संसार भी तो है! मेरी सूची में अभी वनस्पतियाँ तो शामिल ही नहीं हुई हैं। वनस्पतियाँ यानी फफूँद से मॉस तक, ब्रायोफाइट्स से ऑर्किड्स तक, पेड़, पौधों, झाड़ियों, बेलों से विशाल पेड़ों तक हज़ारों-हज़ार जीव!!!

सोचो, कितना विशाल और अद्‌भुत संसार होगा इन जीवों का! और सबसे ज़रूरी बात तो यह है कि जीवन के ताने-बाने में ये सभी एक दूसरे-से जुड़े हैं। इधर ओज़ोन का या कार्बन डाईऑक्साइड का सन्तुलन ज़रा बिगड़ा कि उधर सारा संसार ही धराशाई। अनगिनत जीवों के इस बेहद नाज़ुक ताने-बाने की कहानी जैवविविधता की कहानी है। इसे जानने की अभी तो शुरुआत ही हुई है। इसकी तह में जाने, इसे जानने-समझने की ज़रूरत है। इसके मद्देनज़र साल 2010 को अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष घोषित किया गया है। चकमक

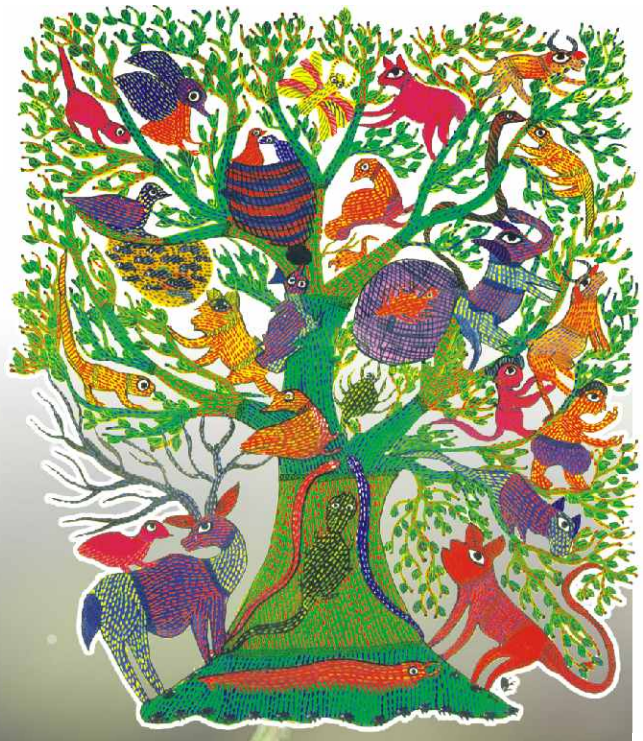

चित्रः दुर्गा बाई

कॉमन जेज़बेल
(Delia eucharis)

इन बेहद सुन्दर तितलियों को अकसर लैंटाना, आम, सरसों, चेस्टनट के फूलों पर मण्डराते हुए देखा जा सकता है। इनके लार्वा एक परजीवी पौधे पर पलते हैं। जिसे डेंड्रोफिथोई नाम से जानते हैं। लार्वा इन विषैले पौधों के विष को पचाते नहीं हैं। बल्कि यह विष इनके शरीर में इकट्ठा हो जाता है। वयस्क होने पर भी यह विष जैसे का तैसा बना रहता है। इसलिए शिकारी इनसे परहेज़ करते हैं। हमले के समय यह तितली मरने का नाटक करती है। इससे ये कम से कम उन शिकारियों से तो बच जाती हैं जो मरे जीवों को नहीं खाते हैं।

पंखों का फैलावः
66-83 मिलीमीटर

2010
अन्तर्राष्ट्रीय
जैवविविधता वर्ष